प्रास्ताविक दो शब्द।

राजा रविवर्मा के चित्र सारे भारतवर्ष में और परदेश मे भी अत्यन्त लोकप्रिय हुए हैं, तथापि उनकी कीमत, सर्वसाधारण लोगों के सामर्थ्यानुसार न होने के कारण सब चित्रों का संग्रह करना सब लोगों के लिए सुलभ नहीं है। ऐसी दशा में, यह विचार हुआ कि यदि ये चित्र हाफटोन प्रोसेस की पद्धति से छोटे आकार में छापकर, उनकी एक पुस्तक तैयार की जाय तो उनका संग्रह करना लोगों के लिए अधिक सुलभ होगा। अतएव यह पुस्तक प्रकाशित की गई। इस पुस्तक में राजा रविवर्मा के प्रायः बहुत से प्रसिद्ध चित्रों का समावेश हुआ है। सब के सुभीते के लिए मूल्य भी बहुत थोडा रखा है। प्रत्येक चित्र के साथ तत्सम्बन्धी पौराणिक अथवा ऐतिहासिक कथानक भी दिया है। पुस्तक के आदि में राजा रविवर्मा का सचित्र संक्षिप्त चरित्र भी दिया है। प्रस्तुत पुस्तक का कथाभाग, तथा राजा रविवर्मा का चरित्र, पण्डित लक्ष्मीधर वाजपेयी ने मराठी पुस्तक के आधार पर लिखा है। आशा है कि हिन्दी-भाषा-भाषी ललितकलाभिमानी रसिक जन इस पुस्तक का अच्छा आदर करेंगे।

प्रकाशक।

अनुक्रमणिका।

प्रसिद्ध भारतीय चित्रकार

राजा रविवर्मा।

त्रावनकोर के क्षत्रिय घराने से राजा रविवर्मा का निकट-सम्बन्ध था। २९ एप्रिल सन् १८४८ को किलिमनूर में इनका जन्म हुआ। राजा रविवर्मा के पूर्वजों ने, लडाई के समय, अपने सैनिक काम से त्रावनकोर के राजा को जो मदद की थी उसके बदले में उन्हें किलिमनूर गावँ इनाम मिला था। अपनी एक बहन और तीन भाइयों में राजा रविवर्मा सब से ज्येष्ठ थे। राजा रविवर्मा की माता उमा अम्बाबाई बडी सुशिक्षित स्त्री थी और उस प्रान्त में कवयित्री के नाते से वह बहुत प्रसिद्ध थीं। इसी कारण इसकी चारों सन्तान अत्यन्त बुद्धिमान उपजीं। चित्रकला की ओर इन सब की पहले ही से प्रवृत्ति थी। उस समय, आज कल की तरह, अँगरेजी शिक्षा का प्रचार न था। अतएव रविवर्मा को पहले पहल सस्कृत भाषा का अध्ययन करना पडा। परन्तु खडिया या कोयले से अपने मकान की दीवालों पर देवताओं के चित्र खींचने की ओर उनकी उसी समय से, विशेष प्रवृत्ति थी।

रविवर्मा की चित्रकला-सम्बन्धी यह प्रीति, उनके मामा राजा राजवर्मा को छोड कर, कुटुम्ब के अन्य मनुष्यों को कुछ पसन्द नहीं आती थी। राजा राजवर्मा अलौकिक बुद्धिशाली और सुसस्कृत मन के पुरुष थे। चित्रकला पर उनकी भी बहुत प्रीति थी और अन्य कलाओं की तरह इस कला मे भी उनकी अच्छी गति थी। उन्होंने राजा रविवर्मा को अच्छा उत्तेजन दिया। रविवर्मा तेरह वर्ष की उम्र में अपने मामा के साथ त्रिवेन्द्रम् को गये और अपनी चित्रकला के कुछ नमूने उन्होंने वहां के महाराज को दिखलाये। उन चित्रों को देखकर महाराज बहुत प्रसन्न हुए। उस समय चित्रकला का व्यवसाय कुछ कम दरजे का समझा जाता था; पर महाराज का मत इसके विरुद्ध था। रविवर्मा ने अल्पावस्था ही में जो चित्र-कुशलता दिखलाई उससे महाराज ने समझ लिया कि यह लडका, आगे चल कर, उत्तम चित्रकार होगा। अतएव महाराज ने उसे अच्छा आश्रय दिया। सन् १८६६ में त्रावनकोर की बडी बहन के साथ राजा रविवर्मा का विवाह हुआ। त्रावनकोर-राज्य के नियमानुसार बाप की मिलकियत लड़के को न मिल कर वह उसकी बहन के लडको को मिलती है। इस नियम के अनुसार राजा रविवर्मा की दो नातिनों का त्रावनकोर के राज्य से स्वामित्व-सम्बन्ध उत्पन्न हो गया है। भारतीय राजघराने के पहले पदवीधर कुमार मार्तण्डवर्मा राजा रविवर्मा के भतीजे के बेटे हैं, अस्तु।

सन् १८६८ मे थियोडोर जान्सेन नामक एक आंग्ल चित्रकार त्रावन-कोर के दरबार में आया। महाराज ने अपने राजकुटुम्ब के अन्य मनु-ष्यों के चित्र खींचने का कार्य उसको सौंपा। यह चित्रकार कुछ क्रोधी स्वभाव का था। इस कारण चित्र खींचते समय वह अन्य लोगों को



स्वर्गीय राजा रविवर्मा ।

अपने पास न बैठने देता था। परन्तु महाराज के कहने से थियोडोर जान्सेन ने रविवर्मा को अपनी चित्रलेखन-कुशलता देखने की आज्ञा दी। इस चित्रकार ने तैल-रंग (Oil colour) में जो चित्र निकाले उनका उभाड़ देखकर रविवर्मा को बड़ा आश्चर्य हुआ और चित्रकला की उस शाखा में प्रवीणता प्राप्त करने का उन्होंने संकल्प किया। उन्होंने तुरंत ही रंग मँगाये और थियोडोर के निकाले हुए चित्र सामने रखकर वे उनकी प्रतिकृति करने का प्रयत्न करने लगे। परन्तु रंग का प्रमाण शुद्ध रीति से मिलाने में सहायता करनेवाला कोई मार्गदर्शक उस समय उनके पास न था, इस कारण उन्हें बहुत सी अड़चनें पड़ने लगीं। उस समय त्रावनकोर राज्य में केवल एक ही महाशय ऐसे थे जो तैलरंग के चित्रों के सम्बन्ध में कुछ ज्ञान रखते थे। उनका नाम रामस्वामी नायक है। ये राजमहल ही में चित्रकला का अभ्यास किया करते थे। एक बार राजा रविवर्मा किसी शंका का निवारण करने के लिए रामस्वामी के पास गये। उस समय रामस्वामी के मन में, क्षुद्र विचारों के कारण, यह ईर्षा उत्पन्न हुई कि भविष्य में यह हमारा प्रतिस्पर्धी होगा। अतएव उन्होंने रविवर्मा की शंका दूर करने से इन्कार किया। इस घटना से रविवर्मा को भी ईर्षा उत्पन्न हुई और उन्होंने निश्चय किया कि जब तक रामस्वामी पर अपनी छाप न बैठा लूँगा तब तक अपना प्रयत्न बराबर जारी रक्खूँगा। प्रतिस्पर्धी मनुष्य को पराजित करने के लिए ईर्षा के समान दूसरा कार्यकर्त्ता गुण नहीं है। रामस्वामी में कल्पना का अभाव था। उन्हें शीघ्र ही यह विश्वास हो गया कि इस गुण में रविवर्मा की बराबरी करने के लिए हम असमर्थ हैं। चित्रकला-सम्बन्धी प्रदर्शनियों में उपर्युक्त दोनों चित्रकारों के चित्र रखे जाते थे पर रामस्वामी को कभी एक भी पारितोषिक नहीं मिला. किन्तु उनके छोटे प्रतिस्पर्धी रविवर्मा को ही बहुधा पारितोषिक मिलते रहे। राजा रविवर्मा को महाराज केरलवर्मा का अच्छा आश्रय मिला था। रविवर्मा ने महाराज और महारानी के चित्र तथा अन्य बहुत से चित्र बनाये थे। सन् १८७३ में मदरास में चित्रकला की बड़ी प्रदर्शिनी हुई। उसमें त्रावनकोर के महाराज ने, अपने दरबार के अँगरेज़ी रेसिडेन्ट की सूचना से, राजा रविवर्मा के दो चित्र रखे थे। उनमें से एक चित्र के लिए उन्हें सोने का पदक मिला। यह चित्र नायर जाति की एक सुन्दर स्त्री का था। उसकी सब जगह उस समय बड़ी प्रशंसा हुई। मदरास के गवर्नर लार्ड हाबर्ट ने रविवर्मा की स्वयं मुलाकात की और उनकी कुशलता की प्रशसा कर के उन्हें अच्छी उत्तेजना दी। रविवर्मा जब त्रिवेन्द्रम गये तब महाराज ने उनका बड़ा आदर किया और उन्हें बड़े बड़े पारितोषिक दिये। जिस चित्र पर रविवर्मा को सुवर्ण-पदक मिला वही चित्र फिर विएना की प्रदर्शिनी में भेजा गया। वहां की प्रदर्शिनी के प्रबन्धकों ने उस चित्र के लिए रविवर्मा को एक पदक और प्रशंसापत्र दिया। अगले वर्ष राजा रविवर्मा ने मदरास की प्रदर्शिनी में एक इस दृश्य का चित्र रखा कि जिस में "एक तामिल स्त्री 'सारबत' नामक वाद्य बजाती है।" इनके पारितोषिक में उन्हें फिर सुवर्ण-पदक मिला। सन् १८७५ ई० में जब महाराज सप्तम एडवर्ड (उस समय प्रिंस आफ वेल्स) भारतवर्ष में आये तब

त्रावनकोर-महाराज ने वह चित्र, और दो चित्रों के साथ, उन्हें अर्पण कर दिया।

उन चित्रो की बहुत प्रशंसा करते हुए महाराज ने कहा कि यूरोपियन चित्रकार की सहायता के बिना ऐसे चित्र बनाना सचमुच ही बडी कुशलता का काम है। सन् १८७६ में रविवर्मा ने "शकुन्तला-पत्र-लेखन" नामक अपना चित्र मदरास की प्रदर्शिनी मे भेजा था। उसके लिए पहले दरजे का इनाम मिला और ड्यूक आफ़ बकिंगहम ने वह चित्र तुरतही मोल ले लिया। रविवर्मा को बालपन में संस्कृत भाषा की शिक्षा मिलही चुकी थी, इस कारण संस्कृत महाकाव्यों के भिन्न भिन्न प्रसंगों के चित्र बनाने की ओर उनकी सहजही प्रवृत्ति हुई। सन् १८७८ में मदरास के सरकारी राजमहल में रखने के लिए ड्यूक आफ़ बकिंगहम की एक बडी तसबीर बनानी थी। यह काम रविवर्मा को ही दिया गया। यह चित्र बहुत ही ठीक और सुन्दर बना है। यह चित्र किसी यूरोपियन चित्रकार के बढिया से बढिया चित्र से भी किसी बात में कम नहीं है। ड्यूक आफ़ बकिंगहम तो इस चित्र को देख कर इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने राजा रविवर्मा की बहुत प्रशंसा की। वे बोले, "मैं अपना चित्र बनवाने के लिए एक प्रसिद्ध यूरोपियन चित्रकार के सामने अठारह बार बैठा, परन्तु राजा रविवर्मा ने अपने चित्र मे मेरा जो सादृश्य दिखलाया है उसका आधा सादृश्य भी उस-यूरोपियन चित्रकार से नही दिखलाते बना"। राजा रविवर्मा मदरास से त्रिवेन्द्रम गये। इसके दो महिने बाद उनके आश्रयदाता त्रावनकोर के महाराज का देहान्त हो गया और उनके भाई गद्दी पर बैठे। ये बडे विद्वान् और चित्र-कला के भोक्ता थे। इनकी इच्छा से रविवर्मा ने "सीताशपथ" नामक चित्र बनाया। बडोदा के दीवान राजा सर टी० माधवराव उस समय त्रिवेन्द्रम आये थे। उन्हें यह चित्र इतना प्रिय लगा कि उन्होंने वह बड़ोदा के महाराज के लिए तत्काल खरीद लिया और अपने लिए सारंगी बजानेवाली स्त्री का चित्र मोल लिया। यह दूसरा चित्र सन् १८८० मे पूने की प्रदर्शिनी मे रखा गया था। वहां उस पर गायकवाड सरकार का सुवर्ण-पदक मिला उस समय सर जेम्स फर्ग्युसन् बम्बई के गवर्नर थे। उन्हें तो यह चित्र इतना पसन्द आया कि उसको दूसरी प्रति रविवर्मा से बनवाकर उन्होंने उसका संग्रह किया। उत्तेजना के लिए गवर्नर साहब ने इंगलैंड के राज-घराने के मनुष्यों के चित्रों की एक पुस्तक रविवर्मा को भेट की। सन् १८८१ के अन्त में जब बडोदा के महाराज श्रीमान् सयाजीराव को अधिकार मिला तब महाराजा के आमंत्रण से राजा रविवर्मा अपने भाइयों के साथ बडोदा गये और वहां वे चार मास तक रहे। इतने अवकाश में उन्हों-ने राजघराने के लोगों, सर टी० माधवराव और रेज़िडेन्ट मि० मेलाविल के चित्र बनाये। इसके बाद भावनगर के महाराज के आमंत्रण से रविवर्मा भावनगर गये और महाराज के लिए उन्होंने कुछ चित्र बनाये। भावनगर से वे फिर त्रिवेन्द्रम को गये। इसके थोडे ही दिन बाद उनके मामा राज-वर्मा का देहान्त हुआ। राजवर्मा ने यदि उत्तेजना न दी होती तो रविवर्मा इतने बड़े प्रसिद्ध चित्रकार हुए होते या नहीं; इसमे सन्देह ही है।

मैसूर के महाराज सर चामराजेन्द्र वोडायर संगीत और चित्रकला के बडे प्रेमी थे। उनके निमंत्रण से राजा रविवर्मा सन् १८८५ में मैसूर गये। वहां वे तीन मास रहे। इतने समय में उन्होंने महाराज और राजकुटुम्ब के अन्य लोगों के चित्र बनाये। मैसूर के महाराज ने रविवर्मा को बडे बडे पारितोषिक दिये। उनमें दो मैसूरी हाथी भी थे। इसके बाद कलकत्ते और लंडन में जो प्रदर्शिनियां हुई उनमें रविवर्मा को रौप्यपदक और प्रशंसापत्र मिले। कुछ दिन बाद उनकी वृद्ध माता का स्वर्गवास हुआ, इस कारण उनके मन को बडा धक्का पहुँचा। यह पूरा वर्ष उन्होंने घर में ही बैठकर व्यतीत किया। सन् १८८८ ई० में श्रीमान् सयाजीराव महाराज गायकवाड नीलागिरी पर्वत पर गये थे। उस समय उन्होंने अपने बडोदा के नवीन राजमहाल में लगाने के लिए रामायण और महाभारत के प्रसगों पर १४ चित्र बनाने के लिए रविवर्मा से कहा। इस लिए पौराणिक काल के राजघरानों के स्त्रीपुरुषों का पहनावा निश्चित करने के लिए रविवर्मा उत्तर भारत के राजाओं की ओर आये। मालवा, दिल्ली, राजपुताना, आगरा, लाहोर, काशी, प्रयाग, कलकत्ता इत्यादि अनेक स्थलों में प्रवास किया; पर उनका उद्देश्य सिद्ध नहीं हुआ।

घर लौट आने पर महाराज गायकवाड के बतलाये हुए चौदह चित्रों का काम उन्होंने हाथ में लिया और १८९० के अन्त में वे चित्र लेकर, राजा रविवर्मा बडोदा को गये। पहले कुछ दिन तक उन चित्रों की प्रदर्शिनी की गई थी, जिसमें सब लोग उनको देख सकें। उन्हें देखने के लिए बम्बई प्रान्त के भिन्न भिन्न स्थानों के सैकडों दर्शक बडोदा को गये थे। इन चित्रों की लाखों प्रतियां सारे भारत भर में खप गईं। इस लोकप्रियता के बल पर रविवर्मा ने बम्बई में एक शिलायंत्रालय खोला। राजा रविवर्मा ने समझ लिया कि पौराणिक और धार्मिक कथाओं की व्यक्तियों के चित्रों पर हम लोगों का बडा प्रेम है। अतएव वे इसी उद्योग में लगे और उसमें कल्पनातीत सफलता प्राप्त की। हिमालय से कन्याकुमारी तक शायदही कोई सुखी कुटुम्ब ऐसा निकलेगा जिसके घर में राजा रविवर्मा का एक भी चित्र न हो। शिकागो की बडी प्रदर्शिनी में रविवर्मा ने दस चित्र भेजे थे। उनमें यहां की चालढाल और पोशाक आदि की रीति दिखलाई थी। उनके लिए रविवर्मा को पदवियां और पदक मिले और अमेरिकन पत्रों ने उनकी बडी प्रशंसा की। राजा रविवर्मा को उनकी उम्र भर में जो पदक और पारितोषिक मिले उनकी सूची यदि दी जाय तो वह बहुत बडी हो जायगी। इस विषय में इतनाही कहना बस होगा कि ऐसा अवसर कभी नहीं आया कि उन्होंने प्रदर्शिनी में अपने चित्र भेजे हों और उन्हें उन चित्रों के लिए पारितोषिक या पदक न मिले हों!

सन् १८९४ में. त्रावनकोर के महाराज, रविवर्मा को मार्तण्डवर्मा के पालनकर्ता के नाते से, उनके साथ, उत्तर भारत का प्रवास करने के लिए ले गये। सन् १९०० में लार्ड कर्जन अपनी पत्नीसहित त्रिवेन्द्रम गये थे। उस समय रविवर्मा से मिलकर उन्होंने उनके कुछ चित्र अवलोकन किये।

उन चित्रों को देख कर लार्ड कर्जन को बडा आनन्द हुआ और राजा रविवर्मा को सम्बोधन करके उन्होंने ये वचन कहे, "पौर्वात्य कल्पना पाश्चात्य रीति से चित्ररूप में प्रकट करने की आपकी सिद्धहस्तता प्रशंसनीय है।"

छापाखाना खोलकर राजा रविवर्मा बम्बई और त्रिवेन्द्रम में बारी बारी से रहने लगे। बम्बई और मदरास के प्रसिद्ध पुरुषों के चित्र उन्होंने बनाये हैं। उदयपुर के महाराना का निमंत्रण पाकर रविवर्मा वहां गये। राजपूताने के प्रसिद्ध शूर महाराना प्रतापसिंह का चित्र वहां उन्हें देखने को मिला। उदयपुर का सृष्टिसौन्दर्य देखकर रविवर्मा को बडा आनन्द हुआ। रविवर्मा के भाई राजा राजवर्मा भी उत्कृष्ट चित्रकार थे। अस्तु।

योद्धा, कवि, नाटककार, वक्ता, साधु, राजनीतिज्ञ, तत्त्ववेत्ता, भिषग्वर्य, वैयाकरणी, ज्योतिषी और शिल्पशास्त्रज्ञ जिस भारतवर्ष में निर्माण हुए उसी भारतवर्ष में रविवर्मा के समान जगत्प्रसिद्ध चित्रकार उत्पन्न करने की भी शक्ति है। यह बात उपर्युक्त अल्प चरित्रलेख से भली भांति सिद्ध होती है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि चित्रकार के नाते से राजा रविवर्मा का नाम भारतवर्ष के इतिहास में सदा चमकता रहेगा। चित्रकला के विषय में हमारे देश के बहुत से होनहार पुरुषों के प्रयत्न दिन-पर दिन बराबर हो रहे हैं, ऐसी दशा में यह आशा करना बिलकुल ही अयोग्य न होगा कि अब शीघ्र ही कोई दूसरा रविवर्मा उत्पन्न होगा।

राजा रविवर्मा का स्वभाव बहुत ही शान्त था और वे उदार मन के सभ्य पुरुष थे। गरीबों को यथाशक्ति मदद देने में वे सदा आनन्दपूर्वक आगे रहते थे। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि उनकी शान्त और रसिक वृत्ति का, चित्रकला-सम्पादन में, उन्हें बहुत उपयोग हुआ होगा। चित्रलेखन से जो समय बचता था उसे वे अँगरेजी भाषा का ज्ञान बढाने में अथवा कोई संस्कृत कविता पढने में खर्च करते थे। उन्हें अपने गुण-गौरव का बिलकुलही गर्व न था। इसके विरुद्ध वे सदा कहते रहते थे कि ज्यों ज्यों मेरा ज्ञान बढता है त्यों त्यों मुझे अपनी पूर्वकृतियों की भूलें मालम होती जाती हैं।





गरुडवाहन विष्णु ।

इस चित्र में यह सुन्दर दृश्य दिखलाया गया है कि भगवान विष्णु गरुड़ पर बैठ कर आकाश-मार्ग से जा रहे हैं और दो सुन्दर देवकन्याएं हाथ में चामर लिये हुए दोनों ओर बैठी हैं।



लक्ष्मी।

ये श्रीविष्णु की पत्नी हैं, इनका जन्म क्षीरसागर में हुआ। ये कमल से उत्पन्न हुई हैं, अतएव इन्हें "कमला" और "कमलजा" भी कहते हैं। देव और दैत्यों ने जब समुद्र-मंथन किया तब उससे चौदह रत्न निकले। उनमें प्रथम लक्ष्मी ही की गणना है। "लक्ष्मी कौस्तुभ पारिजातक सुरा०" इत्यादि श्लोक प्रसिद्ध ही है। लक्ष्मी को हम लोग सम्पत्ति का देवता मानते हैं।



सरस्वती ।

ये ब्रह्माजी की पुत्री हैं। ये विद्या की अधिष्ठात्री देवता हैं। प्रस्तुत चित्र में चित्रकार ने यह रमणीय और अत्यन्त उदात्त दृश्य दिखलाया है कि देवी सरस्वती पर्वतशिखर के एक शिला-खंड पर बैठकर गान कर रही हैं और उनका वाहन मयूर गान सुनता हुआ उनके पास खड़ा है।



कूर्मावतार ।

यह श्रीविष्णु का दूसरा अवतार है । कूर्म पुराण और श्रीमद्भागवत में इस अवतार की विस्तृत कथा लिखी है । उसका सार यह है कि जब पृथ्वी पर पातकों का भार बहुत बढ़ गया तब वह रसातल को जाने लगी; परन्तु श्रीविष्णु ने कच्छप का रूप धर कर उसे अपनी पीठ पर धारण किया और उसकी रक्षा की ।



शंकर ।

श्रीशंकर कैलास में आसन पर बैठे हैं और पार्वती तथा गणपति उनकी गोद में बैठे हैं पास ही नन्दी बैठा है, यही सुन्दर दृश्य इस चित्र में दिखलाया है ।



हरिहरभेट।

इस चित्र में श्रीविष्णु–पत्नीसहित, हाथी पर बैठकर, और श्रीशंकर, पत्नी–पुत्रसहित, नन्दी पर बैठकर, परस्पर भेट कर रहे हैं। चित्रकार ने हाथी और नन्दी के मस्तक–भाग, अलग अलग न दिखा कर, एक ही भाग में दोनों प्राणियों के मस्तक दिखाते हुए जो कौशल प्रकट किया है वह प्रशंसनीय है।



विश्वामित्र–मेनका ।

इस रोष में आकर, कि वसिष्ठ ऋषि हमें "ब्रह्मर्षि" नहीं कहते, श्वामित्र ने लोहपिण्ड भक्षण करके घोर तपस्या प्रारम्भ की । तब देवों राजा इन्द्र को बड़ा सन्देह उत्पन्न हुआ । उसने विश्वामित्र को तपोभ्रष्ट रने के लिए 'मेनका' नामक एक सुन्दर अप्सरा भेजी । उसकी सुन्द-ता और हावभावों से मोहित होकर विश्वामित्र अन्त में तपोभ्रष्ट हो कर ससे रममाण हुए !



श्रीदत्तात्रेय।

अत्रि ऋषि की भार्या अनुसूया महा पतिव्रता थी। उसकी परीक्षा लेने के लिए, ब्रह्मा–विष्णु–महेश उसके आश्रम मे गये और उसकी नग्नावस्था में, उसके पास जाकर, उन्होंने भिक्षा माँगी। परन्तु उसने, पातिव्रत्य के बलपर, उन तीनों देवताओं को बालक बना डाला! फिर सावित्री, लक्ष्मी और पार्वती के प्रार्थना करने पर उसने उन बालकों को पूर्वस्वरूप देकर उन्हें उनकी स्त्रियों को सौंप दिया। इसके बाद उन त्रिदेवों ने अपने अपने अंश देकर एक त्रिमूर्ति निर्माण की और उसका नाम दत्तात्रेय रखा।



हरिश्चन्द्र–तारामती।

राजा हरिश्चन्द्र ने विश्वामित्र को अपना राज्य दान देकर दक्षिणा का द्रव्य चुकाने के लिए, अपनी स्त्री और पुत्र के सहित अपने को बेच डाला। एक बार हरिश्चन्द्र का लड़का रोहिताश्व अपने स्वामी के लिए कमल तोड़ने के लिए तालाब में उतरा। वहां सर्पदंश से उसकी मृत्यु होगई। तारामती पुत्र का शव लेकर स्मशान में गई और चिता रचकर आग लगाई। स्मशान के अधिकारी डोम के सेवक हरिश्चन्द्र ने जब देखा कि यह आज्ञा के बिना शव जला रही है, तब उन्होंने पुत्र का शव चिता से खींच लिया। पुत्र का यह हाल देखकर तारामती रोने लगी। हरिश्चन्द्र ने उसे पहचान लिया और अत्यन्त दुःखी हो कर वे स्तब्ध खड़े रहे उसी समय का यह करुणाजनक दृश्य है।

अयोध्या के राजा अज दशरथ के पिता थे। उनकी इन्दुमती नामक पत्नी अत्यन्त सुस्वरूप थी। एक दिन इन्दुमती राजमहल की छत पर बैठी हुई थी और उधर आकाशमार्ग से नारद मुनि की सवारी जा रही थी. उनकी वीणा में लगी हुई पुष्प माला, वायु के वेग से टूट कर, नीचे बैठी हुई इन्दुमती पर आ गिरी! कोमलता के कारण



इन्दुमती को एकदम मूर्च्छा आ गई और अन्त में उसीसे उसका प्राणोत्क्रमण हुआ। राजा अज ने जब देखा कि इस छोटी सी पुष्पमाला के आघात से हमारी पत्नी के प्राण गये तब वह अत्यन्त शोकाकुल हुआ। रघुवंश के आठवें सर्ग में कालिदास ने इस कथा का वर्णन किया है। उसमें उन्होंने करुणा रस दर्शाने में कमाल कर दिया है।



गंगावतरण ।

राजा भगीरथ के वंशज जब कपिल ऋषि के शाप से दग्ध हो गये तब उनके उद्धार के लिए राजा भगीरथ, बारह वर्ष तपस्या कर के गंगा को पृथ्वी-तल पर लाये। उन्होंने जब देखा कि गंगा का भारी प्रवाह भूमि फोड़ कर पाताल में चला जायगा तब उसका भार सम्हालने के लिए उन्होंने शंकर की प्रार्थना की। इस चित्र में गंगा आकाश से उतर रही है. शंकर उसे जटाओं में धारण करने को खड़े हैं. पार्वती नन्दी के आधार से. राजा भगीरथ हाथ जोड़े खड़े हुए, बड़े आश्चर्य के साथ, गंगावतरण का अनुपम दृश्य देख रहे हैं ।



मोहिनी।

देवों और दैत्यों के समुद्रमंथन करने पर चौदह रत्न निकले। उन अमृत भी था। अमृत लेने के लिए देवों और दैत्यों में बड़ा वाद-विवा हुआ। देवों की अपेक्षा दैत्य विशेष बलवान थे। उन्होंने अमृत का कल देवों से छीन लिया। अब देवता लोग डरे कि यदि अमृत दैत्यों ने पा कर लिया तो ये अवश्य अमर हो जायँगे। उन्होंने श्रीविष्णु की शर ली। विष्णु ने "मोहिनी" का सुन्दर रूप धर कर देवताओं और दैत्य की पङ्क्तियाँ बैठाईं और उस कलश का सारा अमृत देवताओं को परोस दिया। मोहिनी की सुन्दरता से मोहित हो जाने के कारण दैत्य विष्णु इस कपट को नहीं समझ सके। इस चित्र में मोहिनी, वन में एक वृक्ष पड़े हुए, झूले पर बैठी हुई झूल रही है।



किरात-भिल्लिन ।

जब अर्जुन तपस्या कर रहे थे तब उनकी शूरता की परीक्षा करने के लिए शंकर ने किरात-वेष धारण कर के उनसे युद्ध किया और उनका पराक्रम देखकर उन्हें "पाशुपतास्त्र" दिया, इत्यादि कथा महाभारत और महाकवि भारविकृत किरातार्जुनीय काव्य में वर्णन की गई है। उसीके अनुसार यह चित्र बनाया गया है।



राम–धनुर्विद्या–शिक्षण।

विश्वामित्र ने अपने यज्ञयागादि की, राक्षसों से रक्षा करने के लिए राजा दशरथ से रामलक्ष्मण को मांग लिया। फिर उन्होंने दोनों भाइयों को धनुर्विद्या की उत्तम शिक्षा दी। इस चित्र में विश्वामित्र श्रीरामचन्द्र को यह सिखला रहे हैं कि लक्ष्य पदार्थ पर अचल दृष्टि रख कर अचूक बाण कैसे छोड़ा जाता है।



अहल्योद्धार।

यह गौतम ऋषि की महा पतिव्रता पत्नी थी। एक दिन, गौतमजी की अनुपस्थिति में इन्द्र ने गौतम का कपटवेष धर कर अहल्या के पातिव्रत्य का भंग किया। इतने ही में गौतम आश्रम में आगये और क्रोध से उन्होंने इन्द्र तथा अहल्या दोनों को शाप दिया। "तू शिला हो जा।" यह शाप मिलते ही अहल्या ने उःशाप मांगा। गौतम ने कहा, "श्रीरामचन्द्र जब सीता-स्वयम्वर को जायँगे तब उनके पादस्पर्श से तेरा उद्धार होगा।" रामावतार में रामलक्ष्मण-सहित जब विश्वामित्र सीतास्वयम्वर के लिए जा रहे थे तब राम के पाद-स्पर्श से अहल्या ने अपना पूर्वरूप पाया।



अहल्या ।

यह गौतम ऋषि की पत्नी है । इसके बाप ने प्रण किया था कि जो कोई सब से पहले पृथ्वी-प्रदक्षिणा कर आवेगा उसे हम अहल्या देंगे। अहल्या के लोभ से इन्द्र आदि ने पृथ्वी-प्रदक्षिणा की पर उनके आने के पहले ही गौतम ऋषि ने एक प्रसूतावस्थावाली धेनु की प्रदक्षिणा कर के पृथ्वी-प्रदक्षिणा का पुण्य प्राप्त किया और अहल्या को पाया। बाद को जब इन्द्र ने गौतम ऋषि का रूप बनाकर अहल्या का पातिव्रत्य भंग किया तब गौतम ने अहल्या को यह शाप दिया कि " तू शिला होकर रह "। और इन्द्र को यह शाप दिया कि " तेरे शरीर में सहस्र भग हो जायँ "। आगे त्रेतायुग में राम के पादस्पर्श से अहल्या का उद्धार हुआ। पंच महा-कन्याओं में अहल्या का नाम पहले आता है।



शिवधनुर्भङ्ग।

राजा जनक ने प्रण किया था कि " जो शिवधनुष का भंग करेगा उसे सीता जयमाल पहनावेगी ।" राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ जनक के यहां गये । विश्वामित्र की आज्ञा से श्रीरामचन्द्र ने सहज ही धनुष तोड डाला । बाल रामचन्द्र का पराक्रम देख कर जनक-सहित सब क्षत्रियों को बडा आश्चर्य हुआ. इस चित्र में राम को जयमाला पहनाने के लिए उत्सुक होकर सीता जनक के पास खडी है और राम की ओर कौतुक-पूर्वक, परन्तु सलज्ज दृष्टि से, देख रही है । सीता की बहनें और सखियां धनुष को भंग हुआ देख कर आश्चर्यचकित हुई हैं और राजा जनक श्रीरामचन्द्र को नमस्कार कर रहे हैं।



सीताविवाह ।

जनकदुहिता सीता के विवाह के लिए यह प्रण किया गया था कि "जो कोई शिव के इस धनुष को तोडेगा उसीको सीता जयमाल पहना वेगी ।" यह धनुष इतना भारी था कि उसके उठाने में शिव के तीन सौ गए लगते थे, लंकापति रावण ने धनुष उठाने का प्रयत्न कर के अपने को किस प्रकार हास्यास्पद बनाया सो वाल्मीकीय रामायण में बतलाया है। परन्तु श्रीरामचन्द्र ने वह धनुष तोड डाला और सीता ने उन्हें जयमाला पहना दी। इसी मंगल अवसर का सुन्दर दृश्य यहां दिखाया गया है।



इन्द्रजिद्विजय ।

रावण के परम पराक्रमी पुत्र इन्द्रजित (मेघनाद) ने इन्द्र का पराभव कर के उसे, उसकी पत्नी शची-सहित, कैद कर लिया । इस विजयोन्माद से मतवाला होकर इन्द्रजित इन्द्रपदारूढ हुआ है, उसके मस्तक पर सेवकों ने छत्र रखा है इन्द्र पराजित होकर अपना मस्तक नम्र किये हुए उसके सामने खड़ा है और एक राक्षस इन्द्रपत्नी शची को खींचता हुआ इन्द्रजित के सामने ला रहा है—यही दृश्य इस चित्र में दिखलाया है ।



अरण्यवासिनी सीता।

कैकेयी ने दशरथ से दो वर मांग लिये थे। एक वर यह था कि भरत को राज्य दिया जाय और दूसरा यह था कि राम वनवास के लिए भेजे जायँ। इसके अनुसार श्रीरामचन्द्र, सीता और लक्ष्मण ने चौदह वर्ष वन वास किया। प्रस्तुत चित्र में यह दृश्य दिखलाया है कि सीता अकेली एक शिला पर बैठ कर आसपास का सृष्टि-सौन्दर्य देख रही है।



जटायु-पक्षच्छेद ।

वनवास में एक दिन सीता को अकेले पाकर रावण ने हर लिया। और उसे लेकर वह आकाशमार्ग से लंका को चला। मार्ग में दशरथ के मित्र जटायु पक्षी के साथ रावण का युद्ध हुआ। जटायु के सामने रावण की एक भी न चली। अन्त में रावण ने जटायु से यह प्रश्न किया कि "तेरा मृत्युस्थान कहां है?" जटायु ने उत्तर दिया, "मेरा बायां पंख जब तक न टूटेगा तब तक मैं न मरूंगा"। मौका देख कर कपटी रावण ने जटायु का पक्षच्छेद कर के उसे नीचे गिरा दिया! जटायु की यह शोचनीय दशा सीता नहीं देख सकी। इस लिए वह अपने नेत्र ढांक कर शोक कर रही है।



सागर—गर्वापहार ।

रावण ने कपट-वेष से सीता का हरण कर के उसे लंका में ला रखा। हनुमान ने उसका पता लगाया। इसके बाद वानरसेना उतरने के लिए, श्रीरामचन्द्र समुद्र में पुल बांधने लगे। परन्तु समुद्र वह पुल टिकने नहीं देता था, बार बार वह उसे तोड डालता था। इस कारण रामचन्द्र ने कोप कर के समुद्र को दण्ड देने के लिए हाथ में धनुष-बाण लिया। समुद्र ने जब देखा कि अब श्रीराम बाण छोडने ही वाले हैं तब वह स्वयं प्रकट हुआ और राम से क्षमा मांगी। इसी रामायण की कथा के अनुसार प्रस्तुत चित्र बनाया गया है।



अशोकवनवासिनी सीता ।

लंकाधीश रावण ने सीता को अपने यहां अशोक-वन में लाकर रखा और उस पर कुछ राक्षसियों का पहरा नियत कर दिया। प्रस्तुत चित्र में दिखलाया है कि सीता एक वृक्ष के नीचे चिन्तित बैठी है, तीन भयंकर और विद्रूप राक्षसी उसके पास बैठ कर उससे कुछ पूछ रही हैं। एक राक्षसी मतवाली पड़ी सो रही है।



भरतमिलाप ।

कैकेयी के आग्रह से दशरथ ने जब राम को वनवास दे दिया तब कैकेयी के सत्वशील पुत्र भरत ने श्रीराम की पादुका सिंहासन पर स्थापित करके राम के नाम से राज्य करना प्रारम्भ किया और स्वयं नन्दिग्राम में रह कर श्रीरामस्मरण में काल व्यतीत किया। श्रीरामचन्द्र चौदह वर्ष अरण्यवास करके और रावण को मारकर अयोध्या को लौट आये और अत्यन्त प्रेम के साथ वे भरत से मिले। इस अवसर का नाम "भरतमिलाप" है। भरत के समान भ्रातृप्रेम का उदाहरण दूसरा शायद ही मिलेगा।

यह कथा वाल्मीकीय रामायण के उत्तरकांड में है। कुम्भकर्ण के पुत्र मूलकासुर का वध करके जब राजा रामचन्द्र अयोध्या को आये तब एक दिन भरी सभा में कैकेयी ने सीता के पातिव्रत्य में सशय प्रदर्शित किया। उसने स्पष्ट कहा कि सीता के समान तरुण और सुन्दर स्त्री रावण के नगर में पतिव्रता-धर्म से कैसे रही होगी, इस पर मुझे सन्देह होता है।



सातीशपथ ।

सापत्न सासु का यह दुष्ट आरोप सुन कर सीता को अत्यन्त विषाद हुआ और उसने अपनी माता पृथ्वी को पुकारा, "हे माता, यदि मैंने काया, वाचा और मन से श्री रघुनाथ की ही आराधना की हो तो तू मुझे अपने हृदयकमल में वास करने लिए स्थान दे!" यह शपथ करते ही पृथ्वी विदीर्ण होगई और उसने अपनी पुत्री सीता को फिर अपने पेट में धारण कर लिया!

यह बड़ा धर्मात्मा और विष्णुभक्त राजा था। एकादशी व्रत करने का इसका अटल निश्चय था। यमराज इस डर से ब्रह्माजी के पास गये कि मृत्युलोक में विष्णुभक्ति का प्रचार हो रहा है, इस कारण हमारा यमलोक अब उजड़ जायगा। यम की प्रार्थना से ब्रह्माजी ने, राजा रुक्मांगद का सत्व हरण करने के लिए मोहना नामक एक सुन्दर स्त्री भेजी। उसने राजा को इतना मोहित कर डाला कि वह उसके वश हो गया। एकबार एकादशी



राजा रुक्मांगद अपने पुत्र का शिरच्छेद करते है।

का दिन आतेही उसने राजा से अन्नग्रहण करने को आग्रह किया। अन्त में राजा पुत्र का शिर देने के लिए तो राजी हो गया, पर एकादशीव्रत भंग करने के लिए तैयार नहीं हुआ। इस चित्र में राजा रुक्मांगद अपने पुत्र का शिरच्छेद करने के लिए तैयार हुआ है. उसका पुत्र अपने पिता के वचन की रक्षा करने के लिए अपना शिर कटवाने को निर्भयता से खड़ा है और उसकी माता पुत्रवध का प्रसंग देखकर बेहोश हो कर गिर पड़ी है।



मदालसा और ऋतुध्वज ।

गंधर्वकन्या मदालसा परम गुणवती थी। एक राक्षस ने उसे भगा कर उद्यान-मन्दिर में ला रखा। ऋतुध्वज नामक एक सर्व सुलक्षण-सम्पन्न राजपुत्र था। उसे गालव मुनि ने यज्ञ-विघ्न-निवारण के लिए बुलाया था। उसीने, सूकररूप से विचरनेवाले उपर्युक्त राक्षस का, वध किया। इसके बाद जब वह उद्यान में गया तब उसने मदालसा को देखा। दोनों की चार आँखें होने पर दोनों काम-मोहित हो गये और उनका गंधर्वविवाह

हुआ। ऋतुध्वज भार्यासहित अपनी नगरी को लौट आया। फिर एक बार जब कि वह ब्राह्मणों के यज्ञों की रक्षा के लिए पृथ्वी पर घूम रहा था तब उस राक्षस के भाई ने कपटमुनि के वेष में आकर उसका कटभूषण माँग लिया और अलग ही अलग ऋतुध्वज की राजधानी में जा कर राजपुत्र के मरने की मिथ्या वार्ता राजा से बतलाई। सारी नगरी में शोक छा गया और मदालसा ने तत्काल अपने प्राण दे दिये। जब राजकुमार ऋतुध्वज लौटा तब उसे राक्षस का कपट मालूम हुआ। मदालसा के लिए उसने बहुत शोक किया और उसको छोड कर अन्य स्त्री के साथ विवाह न करने का निश्चय करके वह वैराग्यशील बन गया। ऋतुध्वज के कई मित्र थे। उनमें नागराज के दो पुत्र उसके परम स्नेही थे। उन्होंने नाग लोक में जाकर यह समाचार अपने पिता से बतलाया। नागराज ने शिवाराधना करके कन्या मदालसा शिव से प्राप्त की और ऋतुध्वज को अपने घर बुला कर उससे कहा कि, "वर माँग।" ऋतुध्वज ने कहा, "मेरा राज्य धनधान्य आदि से समृद्ध है, मुझे आपकी कृपा से किसी बात की कमी नहीं है।" पर उसके अन्तःकरण का दुःख जान कर नाग राज ने मदालसा को ऋतुध्वज के सामने खडा किया। उसे देखते ही ऋतुध्वज मोह-व्याप्त हो गया। नागराज ने सच बात बतला कर मदालसा उसे अर्पण की। अपनी पुनर्लब्ध भार्या के साथ ऋतुध्वज अपने नगर को आया और सुख से राज्य करने लगा। उसके चार लडके हुए। परन्तु प्रत्येक पुत्र के जन्मते ही मदालसा वैराग्योपदेश करके ब्रह्मपरायण करने लगी। इस प्रकार तीन पुत्र विदेही बन गये। चौथा पुत्र अलर्क ज्यों ही उत्पन्न हुआ त्योंही राजा ने क्रोधपूर्वक मदालसा से कहा कि इसे वेदान्त बतला कर प्रवृत्तिमार्ग से च्युत मत करना। मदालसा ने पति की आज्ञा के अनुसार अलर्क को व्यवहार और राजनीति में दक्ष कर दिया। अलर्क ने बहुत वर्ष राज्य किया और अन्त में अपनी माता के प्रसाद से, अपने अन्य भाइयों की तरह, वह भी ब्रह्मपरायण हुआ। यह मदालसो पाख्यान बहुत सुन्दर है।

इस चित्र में उस समय का दृश्य दिखलाया गया है जब कि ऋतुध्वज राक्षस को मार कर उद्यान में गया है और वहां मदालसा की तथा उसकी चार आखें हुई हैं, और जब वे दोनों परस्पर एक दूसरे पर अनुरक्त हुए हैं।



दमयंती।

राजा नल ने, यह जानने के लिए कि दमयन्ती हमारे साथ विवाह करने के लिए राज़ी है या नहीं, अपना हंस कुंडिनगर को भेजा। दमयन्ती अपनी सखियों के साथ जिस उपवन में घूम रही थी वहीं वह हंस गया। हंस का वर्ण और सौन्दर्य देखकर दमयन्ती मोहित हो गई। इस चित्र में वह हंस को पकड़ने के लिए धीरे धीरे आगे बढ़ रही है और उसकी सखी कौतूहल के साथ उस हंस को देख रही है।



हंस–दमयती ।

विदर्भ देश के भीष्मक नामक राजा के दमयती नामक एक अत्यन्त सुन्दर कन्या थी। उसके सुन्दर रूप का वर्णन सुन कर इन्द्रादि देव भी उस पर लुब्ध हो रहे थे। परन्तु दमयती निषध देश के राजा नल पर आसक्त थी। परन्तु नल को इस बात की खबर नहीं थी, अतएव उसने दमयती की इच्छा जानने के लिए उसके पास अपना हंस भेजा था। उपर्युक्त चित्र में यह दृश्य दिखलाया है कि नल का भेजा हुआ हंस दमयती के बाग में उतरा है और दोनों का कुछ संवाद होने के बाद दमयती, नल के लिए, कोई सन्देशा हंस को बतला रही है।



दमयंती ।

यह राजा भीष्मक की कन्या दमयंती अपने प्रेमी राजा नल के विरह में चिंतित हो कर छत पर खड़ी है और उसकी दासी पंखा से उस पर हवा कर रही है ।



नल—दमयती ।

इस चित्र में दमयती को वन में अकेली सोती हुई छोड कर राजा नल चुपके से उठ जाना चाहता है ।



दमयती।

यह राजा भीष्मक की कन्या और पुण्यश्लोक राजा नल की पत्नी है। यह महा पतिव्रता थी। राजा नल जब द्यूत मे अपना राज्य गवाँ कर वनवासी हुआ तब दमयंती ने भी उसके साथ वनवास स्वीकार किया। बाद को जब राजा उसे अकेला ही वन में छोड कर चला गया तब वह अत्यन्त दुःखी हुई। इस चित्र में वही दुःखित दमयंती बैठी हुई विचार कर रही है।



शकुन्तला और उसकी सखियां ।

शकुन्तला विश्वामित्र ऋषि और मैनका अप्सरा की कन्या है। कराव ऋषि ने इसका पालन किया। महाभारत मे जो शकुन्तला की मूल कथा लिखी है उसमे और कालिदास के शकुन्तला नाटक की कथा में कुछ अन्तर है। यह चित्र शाकुन्तल नाटक की शकुन्तला का है। इस चित्र में यह दृश्य दिखलाया है कि एक सखी शकुन्तला से कुछ बातचीत कर रही है और दूसरी सखी उसकी चोटी बाँध रही है।



शकुतला–पत्र–लेखन ।

कण्व ऋषि की कन्या शकुन्तला जब कि आश्रम में अपनी सखियों के साथ घूम रही थी तब वहां राजा दुष्यन्त आया। राजा और शकुन्तला परस्पर एक दूसरे को देख कर मोहित हो गये। बाद को अपनी सखियों की सूचना से शकुन्तला ने "आपकी क्या अभिलाषा है?" इत्यादि पत्र लिखा। इस चित्र में शकुन्तला विचार करके पत्र लिख रही है और प्रियम्वदा तथा अनुसूया कुतूहलपूर्वक उसकी ओर देखती हुई बैठी हैं।



रंभा ।

रंभा भी इन्द्र की अप्सराओं में से एक सुन्दर अप्सरा है। शुक्राचार्य का तप भंग करने के लिए इन्द्र ने इसीको भेजा था, पर उनकी वैराग्यशील वृत्ति के सामने इसकी एक भी नहीं चली।



भरत ।

भरत, राजा दुष्यन्त का पुत्र, शकुन्तला से उत्पन्न हुआ। यह आर्या-
वर्त में महा पराक्रमी चक्रवर्ती राजा हो गया। बालपन में, जब कि यह
कण्व ऋषि के आश्रम में रहता था, सिंह के छौनों के साथ खेलता था।
यही दृश्य इस चित्र में दिखलाया है। हमारे देश को "भरतखंड" या
"भारतवर्ष" इसीके नाम से कहते हैं।



तिलोत्तमा ।

तिलोत्तमा इन्द्र की अप्सराओं में से एक प्रसिद्ध अप्सरा है। पुराणों में कई जगह इसका नाम आया है। इन्द्रसभा नाटक की तिलोत्तमा और इस तिलोत्तमा से कोई सम्बन्ध नहीं। राजा रविवर्मा का प्रस्तुत चित्र अत्यन्त मनोहर है।



शकुन्तला–पत्र–लेखन ।

प्रस्तुत चित्र में शकुन्तला, अपनी सखियों के कहने से, राजा दुष्यन्त को विचारपूर्वक पत्र लिख रही है और उसकी सखियां उस पत्र का लिखा हुआ भाग पढ रही हैं ।



उर्वशी-पुरुरवा ।

उर्वशी सारी अप्सराओं से सुन्दरता में श्रेष्ठ है। नारायण नामक ऋषि ने अपने उरु से उसे उत्पन्न किया, इस लिए इसका नाम "उर्वशी" पड़ा। पुरुरवा नामक राजा के साथ वह बहुत वर्षों तक रही थी। "विक्रमोर्वशी" नाटक में इसकी विस्तृत कथा है।



गंगा-शान्तनु ।

राजा शान्तनु से गंगा ने इस शर्त पर विबाह किया कि "मैं इच्छानुसार बर्ताव करूंगी तुम मेरी इच्छा के विरुद्ध कोई काम न करना। " अपने आठ पुत्रों में से सात उसने गंगा में डुबो दिये। वचन दे चुकने के कारण राजा शान्तनु कुछ नहीं कर सका। अन्त मे आठवें पुत्र भीष्म को लेकर वह गंगा नदी पर जाने लगी। तब राजा यह विनती करते हुए उसके पीछे लगा कि, " यह पुत्र तो मुझे दे दे ! " यही दृश्य इस चित्र में दिखलाया है। राजा की विनती से गंगा ने वह पुत्र उसे दे दिया और स्वयं नदी मे अंतर्धान होगई। इसीसे भीष्माचार्य को " गांगेय " भी कहते है।



गंगा-भीष्म ।

गंगा ने अपने सात पुत्र गंगा नदी में डाल दिये। वचन-बद्ध हो जाने के कारण राजा शान्तनु लाचार बैठा रहा। कुछ दिन बाद आठवाँ पुत्र भीष्म उत्पन्न हुआ। गंगा उसे भी डालने के लिए ले चली। शान्तनु भी उसके पीछे पीछे गया और पुत्र को गंगा में डालते समय उसने गंगा से विनती की कि, "यह पुत्र तो मुझे दे दे।" अतएव गंगा राजा पर वचनभंग का दोष लगा कर छोड़ जाने लगी। जाते समय यह कहने लगी कि, "यह पुत्र बड़ा होने पर मैं तुझे ला दूँगी।" जाते समय वह पीछे घूम कर राजा की ओर देखती जाती थी, उसी समय का दृश्य इस चित्र में दिखलाया गया है।



शान्तनु-मत्स्यगंधा ।

शान्तनु हस्तिनापुर का राजा और कौरव-पांडवों का परदादा था। वह एक बार जब कि नौका मे बैठकर नदी-पार जाता था तब नौका चलानेवाली "मत्स्यगधा" नामक मल्लाह की सुन्दर लड़की को देख कर मोहित होगया। मत्स्यगंधा भी इस शर्त पर राजा के साथ विवाह करने के लिए राजी हुई कि "मुझ से जो पुत्र उत्पन्न हो वही राज्याधिकारी बनाया जाय।" इसके बाद भीष्म की अनुमति से उन दोनो का विवाह होगया। इस चित्र में जो दृश्य दिखाया है उसमें बल्ली लिये हुए मत्स्यगधा राजा के पास खड़ी है और राजा शान्तनु उससे ढिठाई कर रहा है।



भीष्मप्रतिज्ञा ।

मत्स्यगंधा नामक एक मछुवाहे की लडकी पर मोहित होकर राजा शान्तनु ने उससे विवाह करना चाहा। पर मछुवाहे ने यह कह कर राजा की बात अस्वीकार की कि, " आपका बडा लड़का भीष्म राज्य का अधिकारी होने के कारण इसके पुत्र को राज्य न मिलेगा। " राजा दुःखित होकर लौट आया। बाद को भीष्म एक वृद्ध मंत्री को साथ लेकर मछुवाहे के पास गये और यह प्रतिज्ञा की कि " मैं तो गद्दी पर बैठूं हीं गा नहीं, किन्तु मेरी सतति के विषय में यदि कुछ शंका हो तो मैं आजन्म ब्रह्मचारी रहूंगा।" इस चित्र में जो गंभीर दृश्य दिखलाया है उसमे एक ओर मछुवाहा और उसके कुटुम्ब के लोग खडे है और आगे भीष्म हाथ उठाये प्रतिज्ञा कर रहे हैं। पासही वृद्ध मत्री खडा है।



कंस-माया।

एक पुत्र के द्वारा अपनी मृत्यु होने के भय से कंस ने देवकी के सात पुत्र मार डाले। आठवें पुत्र श्रीकृष्ण के जन्मते ही वसुदेव उसे रातही रात मथुरा से गोकुल को ले गये और उसे नन्द के घर में रख कर, नन्द की हालही में जन्मी हुई कन्या लेकर लौट आये। कन्या का रुदनस्वर सुनतेही दूतों ने कंस को खबर दी। कंस दौडता हुआ वहां आया और उस कन्या को शिला पर पटकने के लिए, उसके पैर पकड कर ज्योंही उसे ऊपर उठाया त्योंही वह आदिमाया प्रणवरूपिणी कन्या कंस के हाथ से निकल कर आकाश को चली गयी और कंस से कहने लगी, " तेरा शत्रु इस पृथ्वीतल पर सुखपूर्वक है। "



कृष्ण का राई-नोन।

इस चित्र में जो दृश्य दिखलाया गया है उसमें माता यशोदा श्रीकृष्ण को गोद में लिये हुए बैठी है, पास ही दो ग्वालिनें बैठी हैं और एक वृद्ध ग्वालिन श्री कृष्ण पर राईनोन उतार रही है।



यशोदा, कृष्ण और राधा।

नन्द की स्त्री यशोदा अपने पुत्र भगवान् कृष्ण को अंक में लेकर विनोद-पूर्वक उसके गुणानुवाद वर्णन करती है। यशोदा के मुख पर वत्सल-रस की छटा इस चित्र में स्पष्ट दिख रही है। श्रीकृष्ण के मुख पर सस्मित गंभीरता और पास ही बैठी हुई तरुण राधा का सकौतुकावलोकन स्पष्ट-रूप से दिखलाने में चित्रकार राजा रविवर्मा ने कमाल कर दिया है!



गोदोहन ।

इस चित्र में यह वत्सलरसप्रधान दृश्य दिखलाया है कि माता यशोदा गौ का दूध दुह रही है और भगवान् श्रीकृष्ण उसकी पीठ मे लिपट कर उससे दूध मांग रहे हैं ।



मृत्तिका—भक्षण ।

भगवान् श्रीकृष्ण ने बालपन में एक बार मिट्टी खाई । इस पर यशोदा ने उनके हाथ बाँधकर उनके चपत लगाई । श्रीकृष्ण ने कहा, " मैंने मिट्टी नहीं खाई है ! " यशोदा बोली, " अच्छा, अपना मुहँ तो दिखला । " श्रीकृष्ण ने ज्योंही अपना मुहँ खोला त्योंही उसमें यशोदा को अनन्त ब्रह्मांड देख पड़ने लगे ! यह विलक्षण हाल देख कर यशोदा आश्चर्य से बिलकुल चकित हो गई ।



कुंजवन में राधा।

भगवान् श्रीकृष्ण बालपन में गोकुल की जिन गोपियों के साथ क्रीडा करते थे उनमें राधा मुख्य थी। इस चित्र के दृश्य में राधा, कुंजवन में बैठी हुई, उत्सुकता के साथ, श्रीकृष्ण की बाट जोह रही है।



राधा-माधव।

राधा कुजवन में श्रीकृष्ण की मार्गप्रतीक्षा करते हुए बैठी थी, इतने ही में पीछे से आकर श्रीकृष्ण ने उसके मस्तक में धीरे से अपनी ठोढी लगा दी। उस समय रोमांचित होकर राधा ने, श्रीकृष्ण को आलिंगन देने के लिए, अपनी भुजाए. उठाई हैं, यही दृश्य इस चित्र में दिखलाया है।



राधा और उसकी सखी ।

गोकुल के वृषभानु नामक ग्वाला की लडकी राधा बहुत सुन्दर थी। अग्निपुराण में लिखा है कि इसने पूर्वजन्म में इस हेतु से तप रा की थी कि श्रीकृष्ण के साथ हमारी प्रीति हो, इसी लिए कृष्णावतार में श्रीकृष्ण ने उसके साथ रमण किया। राधा के पति का नाम अनया था। इस चित्र में राधा अपनी एक सहेली के साथ कुछ बातचीत कर रही है।



वसुदेव-देवकी-बन्ध-विमोचन ।

कम ने जव यह आकाशवाणी सुनी कि " वसुदेवदेवकी के आठवें पुत्र से तेरी मृत्यु होगी " तव भयभीत होकर उसने उन्हें कैद कर रखा । फिर नारद के कहने से उमने देवकी के पेट मे जन्म हुए सात वालक मार डाले । इमके वाद अपने मुख्य शत्रु आठवें पुत्र श्रीकृष्ण को भी वह मार डालता, परन्तु वसुदेव ने युक्तिपूर्वक उसे गोकुल पहुचा दिया। जव यह कम को मालूम हुआ तव उसने पूतना, वकासुर इत्यादि दुष्टों को श्रीकृष्ण के मारने के लिए भेजा, पर उन्होंने इन सव दुष्टों को नाश कर डाला । इसके वाद एक दिन, जव कि कस चिन्ताक्रान्त वैठा था उमे एक युक्ति मूझ पडी । वह यह कि अक्रूर के हाथ उसने श्रीकृष्ण-वलराम को मथुरा में वुलवाया और अनेक दैत्य, मतवाला हाथी आदि उनके ऊपर लगवाये । श्रीकृष्ण ने कम-सहित सव दुष्टों को मार डाला और वसुदेव देवकी को वन्ध-मुक्त किया । उपर्युक्त चित्र में देवकी आनन्दित होकर कृष्ण का चुम्वन लेती है, वसुदेव ने वलराम को छाती से लगा लिया है, लोहार लोग वन्ध खोल रहे है, और एक ओर श्रीकृष्ण के नाना राजा उग्रसेन एक सरदार के साथ खडे हैं ।



अर्जुन–सुभद्रा ।

सुभद्रा को हरण करने के लिए अर्जुन यतिवेष से उसके नैहर में जा कर रहे थे। अवसर पाकर वे सुभद्रा को रैवतक पर्वत की गुहा में ले आये और वहां उन्होंने उसे अपनी पहचान कराई। इस घटना के बाद का कुछ शृंगाररस इस चित्र में दिखलाया है।



द्रौपदी–वस्त्र–हरण ।

यह महाभारत के सभापर्व की कथा प्रायः बहुत लोग जानते हैं। राजा युधिष्ठिर ने दुर्योधन के साथ द्यूत खेलकर स्त्रीसहित अपना सारा वैभव गवाँ दिया। इसके बाद दुष्ट दुर्योधन ने भरी सभा में अपने छोटे भाई दुःशासन से द्रौपदी की जो विडम्बना करवाई उसी अवसर का दृश्य प्रस्तुत चित्र में दिखलाया है। दुःशासन द्रौपदी का वस्त्रहरण करता है, द्रौपदी असहाय हो कर आवेशयुक्त, परन्तु करुणाजनक, चेष्टा से भीष्म आदि सभाजनों की ओर देख रही है, उसकी यह दशा देखकर दुष्ट कौरव बड़ा आनन्द मनाते हैं, परन्तु विदुर, विकर्ण आदि के समान पुरुषों ने अपनी गर्दनें नीची कर ली हैं, इत्यादि मनोहर दृश्य इस चित्र में स्पष्ट दिखलाये हैं।



सुदेष्णा-द्रौपदी।

पांडव जब राजा विराट के घर में अज्ञातवास कर रहे थे तब विराट के साले कीचक की द्रौपदी पर दृष्टि पडी। उसने द्रौपदी को वश करने के लिए बहुत से प्रयत्न किये, पर सब व्यर्थ हुए। अन्त मे उसने अपनी वहन सुदेष्णा से विनती की कि तुम मांस-पात्र देकर द्रौपदी को मेरे महल में भेजो। इस चित्र में उस समय का दृश्य दिखलाया है जब कि सुदेष्णा, द्रौपदी से, कीचक के पास मांस-पात्र ले जाने के लिए कह रही है और वह विचारी, दीनता के साथ, हाथ जोड कर सुदेष्णा से विनती कर रही है कि, " कृपा कर ऐसा बुरा काम मुझ से न बतलाइये। "



सैरंध्री (नं० १)

सैरंध्री जब मद्यपात्र लेकर कीचक-मन्दिर के पास आई और उसने जब कीचक को देखा तब तिरस्कार और भय के कारण उसकी जो चेष्टा होगई, उसीका दृश्य इस चित्र मे दिखलाया गया है।



सैरंध्री (न० २)

मद्यपात्र लेकर कीचक के यहां जाते समय सैरंध्री के मन की जो दशा हुई थी वही इस चित्र में दिखलाई है।



सैरंध्री (नं० २)

पांचो पांडव और द्रौपदी जब विराट के यहां अज्ञातवास में थे तब द्रौपदी ने वहां " सैरंध्री " का नाम धारण किया था। विराट का साला कीचक उसे देख कर मोहित हो गया और अपनी बहन सुदेष्णा से उसने आग्रह-पूर्वक कहा कि, " सैरंध्री के हाथ मुझे मद्यमांस भेज देना। " सुदेष्णा ने सैरंध्री को मद्यपात्र देकर कीचक के पास जाने की आज्ञा दी, उस समय उस पतिव्रता के मन की जो दशा हुई वही इस चित्र में दर्शाई गई है।



कीचक-सैरंध्री

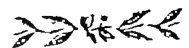
सैरध्री को एकान्त में घेर कर दुष्ट कीचक उससे प्रेम-भिक्षा माँग रहा है और वह विचारी डर गई है, यही दृश्य इस चित्र में दिखाया है।



कृष्ण-शिष्टाई ।

महाभारत के उद्योग पर्व में यह कथा आरम्भही में दी है । पाडव जब वनवास से लौट आये तब धृतराष्ट्र से, अपना राज्य माँगने के लिए, उन्होंने श्रीकृष्ण को कौरवो के दरबार मे भेज । विदुर और भीष्म के समान गम्भीर सज्जनों ने श्रीकृष्ण का बडा सन्मान किया। उन्होंने धृतराष्ट्र को यह सम्मीत भी दी कि श्रीकृष्ण की मध्यस्थी को मान करके पाडवा का राज्य उन्हे लौटा दिया जाय । धृतराष्ट्र का भी यही विचार था कि पाडवों का राज्य दे दिया जाय और उसने अपना यह विचार प्रकट भी कर दिया । पर दुष्ट दुर्योधन बीच ही मे कूद पडा और श्रीकृष्ण का अपमान करके पाडवो का राज्य देने से इन्कार किया । श्रीकृष्ण ने प्रार्थना की कि पाच पाडवों को कम से कम पाच गावँ तो दिये जायँ। इस पर दुर्योधन ने उत्तर दिया, "पाच गॉव तो क्या, सुई के अग्रभाग पर जितनी मिट्टी ठहर सकती है उतनी मिट्टी भी मैं पाडवा को नही दे सकता ।" दुर्योधन के इसी उद्धटपन के कारण महाभारत का युद्ध हुआ और उसमे सौ कौरव तथा उनके साथ लाखों वीरो का जो विध्वंस हुआ उसकी कथा प्रसिद्धही है।

यह बाणासुर की लड़की है। इसने पार्वती के वरदान के अनुसार एक रात को स्वप्न देखा कि मानों एक सुन्दर तरुण राजपुत्र हमारा चुम्बन ले रहा है। दूसरे दिन से वह उसी राजपुत्रके पीछे पागल सी हो गई और उस के लिए उसने उदासीन वृत्ति धारण कर ली। अन्त में उसकी चित्रलेखा नामक सखी ने पृथ्वी भर के सब राजपुत्रों के चित्र खींच कर उसे दिखलाए, ताकि उसे अपने प्रेमी की पहचान मिले। उन चित्रों में श्रीकृष्ण के नाती 'अनिरुद्ध' को देख कर उषा ने बतलाया कि हमने स्वप्न में जिस राजपुत्र को देखा है वह यही है। इस चित्र में उषा स्वप्नावस्था में पड़ी है और अनिरुद्ध उसका चुम्बन लेने के लिए उत्सुक हो रहा है।



उषास्वप्न।



उषा और चित्रलेखा ।

बाणासुर नामक एक दैत्य शोणितपुर नामक नगर मे राज्य करता था। उसकी कन्या उषा एक दिन कैलास को गई। वहा उसने महादेव और पार्वती को पासा खेलते हुए देखा। इस लिए उसे इच्छा हुई कि मेरा भी विवाह हो और मै भी अपने पति के साथ इसी प्रकार बैठ कर पासा खेलू। कुछ दिन बाद पार्वती के वर के अनुसार राजकुमार अनिरुद्ध उसे स्वप्न मे देख पडा। उषा ने उसीको अपना पति समझकर उसका पता लगाने का प्रयत्न किया। उसकी दासी चित्रलेखा चित्रकला मे बडी कुशल थी। उसने पृथ्वीतल के अनेक राजपुत्रो के चित्र बनाये। अन्त मे अनिरुद्ध को देखकर उषा समझ गई कि यही राजकुमार है, जिसने स्वप्न में मेरा चुम्बन लिया था। उसके बाद चित्रलेखा योगमार्ग से द्वारका को गई और अनिरुद्ध को लाकर उषा से मिला दिया। दोनो का गाधर्वविवाह होगया। कालान्तर से यह बात बाणासुर को मालूम हुई। उसने अनिरुद्ध पर अनेक दैत्य भेजे, द्वारका से श्रीकृष्ण और सारे यादव अनिरुद्ध की सहायता को आये। कैलास से शकर और स्वामिकार्तिक बाणासुर की मदद मे आये। बड़ा भारी युद्ध हुआ, पर अन्त मे सुलह हो गई और उषा के साथ अनिरुद्ध का विवाह हुआ।



शुक-रम्भा ।

वेदव्यास के पुत्र श्रीशुकाचार्य बडे भगवद्भक्त और आजन्म ब्रह्मचारी थे। उनका तपोबल देख कर इन्द्र डरा कि कहीं ये हमारा इन्द्रासन न लेलें। अतएव उसने शुक को तपोभ्रष्ट करने के लिए रम्भा नाम की अप्सरा भेजी। उसने अपने नेत्र–कटाक्षों से और अन्य हावभावों से शुकाचार्य की चित्तवृत्ति चचल करने का बडा प्रयत्न किया, पर अन्त में हताश हो कर वह अपने भवन को चली गई। "रम्भा-शुक-सम्वाद" नामक संस्कृत ग्रन्थ बहुत ही मनोहर और शिक्षाप्रद है।



कल्कि ।

यह विष्णु का दसवाँ अवतार है। द्वापर युग में जो कलियुग कैद या वह आज कल स्वेच्छाचार विचर रहा है। पुराणों के कथनानुसार आज कल यहाँ उसीका राज्य है। उसके राज्य में जब इतने पाप बढ जायँगे कि लोग धर्मभ्रष्ट हो जायँगे तब पृथ्वी कंपायमान होगी और अन्त में परमात्मा विष्णु कल्कि-अवतार धारण करके म्लेच्छों का नाश करेंगे। यह भविष्य कल्कि-पुराण में कहा गया है।



तारादेवी ।



तारा ।



वारिणी ।



पद्मिनी ।

चार जाति की स्त्रियां होती हैः-पद्मिनी, चित्रिणी, हास्तिनी और शंखिनी । सामुद्रिक-शास्त्रकारों ने जिन स्त्रियों का वर्णन किया है उनमें से यह पद्मिनी जाति की स्त्री का चित्र है । इसके विषय में कहा है कि इसके शरीर से कमल के समान सुवास आती है, इसका आहार बहुत थोड़ा होता है और चाल इसकी हासिनी के सदृश होती है । उदयपुर के महाराना भीमसिंह की स्त्री पद्मिनी बहुत सुन्दर थीं, क्या यह उसी का चित्र तो नहीं है ?



वासतिका ।

यह एक कल्पित स्त्री का चित्र है। इस चित्र में जो दृश्य दिखलाया है उसमें वसन्त ऋतु की देवी, एक सुन्दर तरुणी, वसन्त ऋतु में, गले में और हाथों में पुष्पमाला धारण किये हुए, एक वृक्ष के सहारे खड़ी है।



मानिनी ।

यह एक सुन्दर मानिनी स्त्री का चित्र है। अपने रूप और गुणों का अभिमान रखनेवाली तथा पति से मान पाने की अपेक्षा रखनेवाली रमणी को मानिनी कहते हैं।



वसन्तसेना ।

यह शूद्रक-कवि-कृत मृच्छकटिक नाटक की नायिका है । यह बहुत सुन्दर और सद्गुणी स्त्री वेश्या जाति की थी । उज्जयिनी नगरी के चारुदत्त नामक उदार सद्गुणी साहूकार पर यह मोहित हो गई थी । उज्जयिनी के राजा पालक के दुष्ट साले शकार ने जब देखा कि यह वेश्या हमारे वश नहीं होती तब उसने इसे जान से मार डालने का प्रयत्न किया और इसका आरोप विचारे चारुदत्त पर लाद दिया । न्यायाधीश ने चारुदत्त को सूली पर चढ़ाने की आज्ञा दे दी । राजदूत चारुदत्त को वधस्थान की ओर लिये जा रहे थे, इतने हीं में वसन्तसेना वहा आ गई और चारुदत्त भी छूट गया । इसके वाद आर्यक नामक ग्वाला ने राजा पालक को मार डाला और राज्य पर अपना आधिकार कर लिया । यह चारुदत्त का मित्र था, उसने चारुदत्त को भी वड़ा आधिकार दिया । वसन्तसेना और चारुदत्त दोनों से रहने लगे ।



प्रियदर्शिका।

बृहत्कथासागर और प्रियदर्शिका नाम के दो ग्रन्थो में इसकी कथा है। प्रियदर्शिका दृढवर्मा नामक राजा की कन्या है। कौशाम्बी के पराक्रमी राजा वत्सपति के महल में यह कन्या कुछ दिन के लिए गई। वहां वत्सपति और प्रियदर्शिका दोनो एक दूसरे पर अनुरक्त हो गये, परन्तु राजा की पत्नी वासवदत्ता बड़े तामसी स्वभाव की थी। उसने ज्यों ही यह बात जान पाई त्योंही उसने उन दोनो को अलग अलग कर दिया कालान्तर में प्रियदर्शिका सर्प के काटने से व्यथित हुई, राजा ने अपने मंत्रबल से उसे बचाया। इस लिए वासवदत्ता ने प्रसन्न हो कर, अपनी यह मौसेरी बहन, प्रियदर्शिका राजा को अर्पण की। प्रस्तुत चित्र में प्रियदर्शिका कुछ सोचती हुई बैठी है।



मालती ।

मालती महाकवि भवभूतिकृत मालतीमाधव नाटक की नायका है। यह माधव नामक एक सुन्दर तरुण पर मोहित हो गयी थी। अघोरघंट और कपालकुंडल नामक दुष्ट शाक्त, देवी को बलि देने के लिए इसे भगा ले गये। माधव ने उस संकट से इसकी रक्षा की। अन्त में, अनेक विघ्नों से पार होकर, मालती और माधव का विवाह हो गया। मालती बहुत कुलीन और सुशील थी। प्रस्तुत चित्र में उसके गुणों की छाप स्पष्टतया उमटी हुई देख पड़ती है।



मनोरमा ।

यह मनोरमा (मन को रमानेवाली) नामक सुन्दर स्त्री का चित्र है

इस चित्र में एक ऐतिहासिक प्रसंग दर्शाया है। विजयनगर के राजा ने मालवा के राजा मुंज को अपने महल में कैद कर रखा। वहां विजयनगर के राजा की बहन राजा मुंज पर आसक्त होगई और वे दोनों साथही भग चलने का विचार करने लगे। यह बात कुसुमावती के एक नौकर ने उसके भाई से बतला दी। तब वह बड़े क्रोध से कुसुमावती के महल में घुसा। वहां जाकर देखता है तो दोनों, प्रेमी



कुसुमावती।

और प्रेमिका, उपस्थित थे। क्रोध से बेहोश होकर और तलवार खींच कर वह मुंज की ओर दौड़ा। वीर्यशालिनी कुसुमावती अपने प्यारे की रक्षा करने के लिए अपने भाई का हाथ पकड़ कर बोली, "खबरदार! मुंज का यदि बाल भी बाँका हुआ तो मैं अपने हाथ का खंजर तेरे हृदय में भोंक दूंगी। यही विलक्षण दृश्य, ब कौशल से राजा रविवर्मा ने यहां दिखलाया है।



लालारुख़ ।

औरंगजेब की बादशाहत के ग्यारहवें वर्ष में बुखारा के बादशाह ने अपना राज्य अपने लड़के के सिपुर्द किया और आप मक्के की यात्रा को चला गया। वहां से घूमते घूमते वह हिंदुस्तान को आया। कुछ दिन काश्मीर में रह कर फिर वह दिल्ली आया और वहां भी कुछ समय रहा। औरंगजेब ने इस बड़े पाहुने को आदर-सत्कार-पूर्वक रखा। औरंगजेब और बुखारे के बादशाह में बहुत प्रेम हो गया और दोनों ने विचार किया कि औरंगजेब की अत्यन्त रूपवती कन्या लालारुख़ के साथ बुखारे के राजकुमार फ़ज़लुद्दीन का विवाह किया जाय। अन्त में दोनो ने

निश्चित किया कि फ़ज़लुद्दीन काश्मीर आवे और औरंगजेब भी अपनी कन्या वहां भेज दे। इस प्रस्ताव के अनुसार फ़ज़लुद्दीन काश्मीर में आया और इधर से औरंगजेब ने भी अपनी कन्या को भेज दिया। फ़ज़लुद्दीन बड़ा विद्वान, रसिक और मनुष्यस्वभाव का अच्छा परीक्षक था। जब कि लालारुख़ काश्मीर की ओर जा रही थी तब फज़लुद्दीन गवैये के वेष से, 'फ़िर-अमरोज़' नाम धारण करके, उसका मनोरंजन करने के लिए, उसके पास नौकर हो गया। लालारुख अपने भावी पति का दर्शन करने के लिए उत्सुक हो रही थी, अतएव उसका समय मार्ग में नहीं कटता था। काश्मीर की वनश्री से भी उसका चित्त आल्हादित नहीं हुआ। ऐसे समय में गायक-वेष-धारी फ़जलुद्दीन ने, नाना प्रकार के गीत गाकर और कहानियां कह कर, राजकन्या का अच्छा मनोरंजन किया। उसकी विद्वत्ता, सुन्दरता और चतुरता इत्यादि गुणों का परिचय पाकर राजकन्या बहुत कुछ उस पर मोहित हो गई। वह विचारी तरुण बाला क्या जाने कि हमारा पति फजलुद्दीन यही है। इस प्रकार सफर करते करते लालारुख अपने पति के डेरे के समीप पहुँच गई। इतने ही में गायक-वेषधारी फज़लुद्दीन उसे छोडकर चला गया। राजकुमार ने अपनी भावी पत्नी के लिए सब प्रकार का उत्तम प्रबन्ध कर रखा था और उसके मन को आनन्दित करने के लिए सारे साज-सामान वहां एकत्र कर रखे थे। तथापि राजकन्या को, जो गवैये के रूप और गुणों पर लुब्ध हो रही थी, इन बाह्योपचारों से कुछ विशेष आनन्द नहीं हुआ। हां, इतना अवश्य हुआ कि वह समझ गयी कि हमारा पति हमारी बहुत चिन्ता रखता है। उसका मन फिर-अमरोज़ पर इतना मोहित हो गया था कि फ़ज़लुद्दीन के विषय में प्रेम उत्पन्न होने के लिए उसमे स्थान ही न था। अतएव उसके ठहरने आदि के लिए जो अच्छा प्रबन्ध शाहजादे ने किया था उसकेलिए राजकन्या के मन में, फज़लुद्दीन के विषय में, सिर्फ कृतज्ञता मात्र उत्पन्न हुई। अस्तु। फ़ज़लुद्दीन ने अपनी पत्नी के पाणिग्रहण के उपलक्ष में बडा दरबार किया। पति के पास सिंहासन पर जा बैठने के लिए, पूर्व-प्रेमी के विरह से दुःखी, शाहजादी दरबार में आई, उसके पाणिग्रहण के लिए फ़जलुद्दीन ने अपना हाथ बढ़ाया। इतने में लाला-रुख ने ज्यो ही देखा कि हमारे सामने सिंहासन पर खडा हुआ पुरुष वही पूर्व-परिचित गवैया है त्यों ही वह आश्चर्य से चकित होकर जोर से चिल्लाई और बेहोश होकर गिर पडी। फ़जलुद्दीन ने उठाकर उसे सन्तुष्ट किया और फिर वह युगलजोडी, जो पहले ही से परस्परानुरक्त थी, बडे सुख से रहने लगी। इस रमणीय कथा पर आंग्लकवि मूर की एक बडी कविता है, उसे रसिक पाठक अवश्य पढें।





बेगम की स्नानविधि ।

मुसलमान राजा की रानी को बेगम कहते हैं। प्रस्तुत चित्र में जो दृश्य दिखलाया है उसमें एक बेगम स्नान करने लिए हम्माम (स्नानागार) में आई है और उसकी दासियां कपडे इत्यादि निकाल रही हैं।



भारत की सब जातियों की स्त्रियां।

इस चित्र में मलया, राजपूत, बंगाली, पारसी, मुसलमान, गुजराती, मारवाड़ी महाराष्ट्र, सिन्धी, इत्यादि, नव हिन्दुस्तानी स्त्रियां दिखलाई गई हैं।



महाराष्ट्र-सुन्दरी ।

यह महाराष्ट्र की एक साधारण सुन्दर स्त्री का चित्र है ।



वैष्णवकन्या ।

द्वैतमत-प्रतिपादक श्रीमध्वाचार्य के अनुयायियों को वैष्णव समझना चाहिए। यह कर्नाटक की एक वैष्णव-कन्या का चित्र है।



मदरासी सुन्दर स्त्री ।

यह मद्रास की ओर की–द्रविड देश की–एक सुन्दर और अलंकृत स्त्री का चित्र है ।



मदरासी लड़की ।

यह एक मदरासी लडकी का चित्र है ।



मलयाली स्त्री।

दक्षिण की ओर के मलाबार प्रान्त को मलय-प्रदेश कहते हैं। यहाँ के लोग मलयाली भाषा बोलते हैं। प्रस्तुत चित्र में एक सुन्दर मलयाली स्त्री अपने छोटे बच्चे को कनियाँ में लिए हुए खड़ी है और उसे कोई वस्तु दिखलाकर उसका मनोरंजन कर रही है।



मलया स्त्री ।

इस दृश्य में मलावार प्रान्त की एक सुन्दर स्त्री सितार वजा रही है ।



मलय–सुन्दरी ।

यह एक मलावारी सुन्दर स्त्री का निद्रितावस्था का चित्र है ।



मलयाल-सुन्दरी ।

त्रावनकोर के एक ओर के प्रदेश को मलयाल देश कहते हैं, वहां की एक सुन्दर स्त्री का यह चित्र है।



गोवा-वासिनी ।

गोवा प्रान्त की वेश्याएं गान और सुन्दरता आदि गुणों में प्रसिद्ध है; उनमें से एक सुन्दर और तरुण वेश्या का यह चित्र है ।